श्री पद्मप्रभ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री पद्मप्रभ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें बसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी ॥ 8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे ॥ 9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ–बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि–सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्‌रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पद्मप्रभ विधान

जय बोलिये

निस्पृहता के स्वामी
परमात्मा में विरामी
सर्वज्ञ केवलज्ञानी
जगत् के कल्याणी
कमल सम खिले हुये
शुद्धात्म में मिले हुये
सबके उपकारी
मोक्ष के विहारी
परमपूज्य
श्री पद्मप्रभ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : हे शारदे माँ....)

श्री पद्मप्रभु जी, हमें आप तारें।
हृदय में हमारे, कृपा कर पधारें॥

1.

करे रोज दर्शन, जो भी तुम्हारे।
दुनियाँ में उसके, हैं बारे-बारे॥
ज्योति हमारी, प्रभुजी उजारें।
हृदय में हमारे, कृपा कर पधारें॥

2.

चरण शरण पाने, जिसने भी पूजा।
उससा नहीं कोई, जग में हो दूजा॥
अपनी नजरिया, हम पै भी डारें।
हृदय में हमारे, कृपा कर पधारें॥

3.

जो वीतरागी, धरे रूप तेरा।
उसको मिलेगा मनचाहा डेरा॥
सदाचार पाने हम भी पुकारें।
हृदय में हमारे कृपा कर पधारें॥

4.

तुम ही हमारे, हो मार्ग मंजिल।
बिना आपके अब लगता नहीं दिल॥
'सुव्रत' के दिल को, आप ही सँवारें।
हृदय में हमारे कृपा कर पधारें॥
श्री पद्म-प्रभु जी.....॥

श्री पद्मप्रभ विधान

स्थापना

(बसन्ततिलका - भक्तामरप्रणत...)

हे! पद्मनाथ परमेश जिनेश स्वामी।
तीर्थेश षष्टम विभो कमलेश नामी॥
संसार में कमल-सम बनके विरागी।
चैतन्य रूप चखते बन वीतरागी॥

चारित्र के परम पूजित हो विहारी।
सारे विभाव दुख संकट के निवारी॥
वैराग्य के सुरथ पै हमको बिठाओ।
संन्यास दे हृदय में जिनदेव आओ॥

ये अर्चना हम करें प्रभु नाम लेके।
शुद्धात्म का वरण हो जिन जाप देके॥
दे दो हमें चरण की बस धूल थोड़ी।
सम्बन्ध हो मुकति से बन जाए जोड़ी॥

(दोहा)

पूज्य पद्मप्रभु देव जी, भक्त जनों के ईश।
सबको तो सब दो मगर, हमको दो आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.......)

ये जन्म मृत्युभय चेतन को सताते।
डूबे स्वयं भव समुद्र हमें डुबाते॥
श्रद्धान दो वरदहस्त समाधिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

संसार ताप तपते हमको तपाते।
चैतन्य के महल तो बिखरे हि जाते॥
दो जैन तीर्थ सुधरे निज आत्म वास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

आज्ञा न देव गुरु शास्त्र जनों की मानी।
पाये न भोग जग के नहीं मोक्ष रानी॥
हो छत्र छाँव हम पै कह दो तथास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

तृष्णाएँ काम मृग की मिटतीं न स्वामी।
जो भोग-भोग बनता दुठ और कामी॥
दुर्दर्प काम तज दो निज ब्रह्म वस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

सारे हि रोग नशते जग औषधि से।
पै भूख रोग बढ़ता चरु औषधि से॥
ऐसी क्षुधा हरण को व्रत वृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

है मोह की हर किरण करती अँधेरे।
तो भी सभी जगह पै उसके वसेरे॥
वैराग्य ज्ञान मणि चेतन खोज ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

सर्वत्र कर्मफल जीव चखे अकेले।
देते न साथ जगबन्धु गुरु न चेले॥

दो कर्म के हरण को जप ध्यान अस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

संसार वृक्ष कड़वे फल वो खिलाते।
खाके जिन्हें हम सदा मरते हि जाते॥
सम्यक्त्व संयम सुधा मृत स्वाद ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

अध्यात्म की शिखर की सबसे ऊँचाई।
शुद्धात्म धाम जिससे बस दे दिखाई॥
वो देवशास्त्र गुरु ही बस दान देते।
पूजा विधान विधि सो हम ठान लेते॥

ये नीर चन्दन चढ़े जब द्रव्य-भावी।
तो ही विभाव नशते बनते स्वभावी॥
पाएँ स्वभाव निजभाव समृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोस्तु॥

(दोहा)

इस अनन्त संसार में, पूज्य पद्मप्रभु नाथ।
कोई अपना है नहीं, अतः दीजिए साथ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

माघ कृष्ण छठ को तजे, ग्रैवेयक सुरसाज।
मातृ सुसीमा गर्भ में, बसे पद्म जिनराज॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गये सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(बसन्ततिलका)

संसार में शरण हैं जिनदेव साँचे।
ध्या के सदाचरण भक्त मयूर नाँचे॥
सर्वस्य पाप विधि बन्धन को नशाते।
सो भक्त भक्तिमय हो गुणमाल गाते॥

(ज्ञानोदय)

जिनके रिश्ते नाते छूटे, भाग्य कमल भी मुरझाये।
दूर हुए जो प्रभु से प्राणी, बहुत बुरे दिन भी आये॥
घोर निराशा के अँधियारे, जिनके जीवन में होते।
वही पद्मप्रभु को ध्या करके, बोलो कौन कहाँ रोते॥ 1॥

आओ उनकी कथा वाँच लें, जो वचनों को शुद्ध करें।
जिनके पथ पर चलने वाले, भक्त स्वयं को सिद्ध करें॥
नगर सुसीमा के अपराजित, राजा सार्थक नाम धरे।
अन्तरंग बहिरंग शत्रु को, जीत दया के काम करे॥ 2॥

राजभोग को भोग बाद में, चिन्तन कर गंभीर हुए।

क्षण भंगुर नश्वर जग माया, पुद्गल कर्म शरीर हुए॥
चिदानंद का वैभव पाने, राज्य पुत्र को सौंप दिया।
जिनदीक्षा को वन जा खुद को, प्रभु चरणों में सौंप दिया॥3॥

कठिन साधना तूफानी कर, जैनधर्म का नाद किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
अन्त समय में कर सल्लेखन, ग्रैवेयक अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग नृप अपराजित के, पुत्र कमल सम पद्म हुए॥4॥

जन्म हुआ ज्यों हर्ष हुआ त्यों, मोह शोक का अन्त हुआ।
वैर विरोध काँप कर भागें, घर-घर पर्व बसन्त हुआ॥
इन्द्रों ने फिर न्हवन कराके, पूज्य पद्म प्रभु नाम रखा।
पर्व जन्म कल्याणक करके, पुण्य भक्ति को खूब चखा॥5॥

जिन बालक बन पालक ऐसे, कौन करे वर्णन उसका।
वो सौभाग्य नहीं पा सकता, अल्प भाग्य होगा जिसका॥
हाथी की दुर्दशा श्रवण कर, पूर्व भवों का ज्ञान हुआ।
तत्त्व स्वरूप जानकर खुद को, खुद पर खेद महान् हुआ॥6॥

यहाँ कौन-सा पदार्थ ऐसा, जिसको मैंने छुआ नहीं।
देखा सूँघा खाया ना हो, जिसको मैंने सुना नहीं॥
अभिलाषा के इस सागर को, पूर्ण कौन भर पाया है।
भोग सर्प ने तन वामी में, रहकर विष फैलाया है॥ 7॥

फिर भी मोह उसी से करके, आत्म धर्म को भुला दिया।
पापों को ही धर्म मानकर, शाश्वत चेतन सुला दिया॥
जिन्हें हुआ वैराग्य उन्हीं के, लौकान्तिक सुर में सुर गा।
बेला सहित लिए जिनदीक्षा, सजे मनोहर वन में जा॥8॥

ज्ञान मनःपर्यय फिर पाया, फिर चर्या की दिन अगले।
पाँच वृत्तियों से भोजन कर, सोमदत्त को पुण्य मिले॥
गुप्ति समिति अनुप्रेक्षा करके, परिषहजय चारित्र धरा।
संवर तप से किए निर्जरा, छह माहों का मौन धरा॥ 9॥

जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, केवलज्ञानी संत बने।
नर इन्द्रों ने सुर इन्द्रों ने, पूजा जब भगवन्त बने॥
सुनो! एक सौ दस गणधर से, समवसरण भी खूब भरा।
जिसमें कमलासन पर प्रभु का, निज चैतन्य रूप निखरा॥10॥

दिव्य देशना देकर खुद को, साबित सच्चा आप्त किया।
मासिक योग निरोध धारकर, अहा! मोक्ष को प्राप्त किया॥
श्रीसम्मेदशिखर का पावन, पूजित मोहनकूट हुआ।
मना मोक्षकल्याणक प्रभु का, अपना दिल अभिभूत हुआ॥11॥

ऐसे पद्मप्रभु की मूरत, बड़े पुण्य से पायी है।
पाप निर्जरा पुण्य प्राप्ति को, पूजा नित्य रचाई है॥
स्वामी आप वरों के दाता, हम आये वर पाने को।
छींटा दे दो ज्ञान कणों का, हमें होश में आने को॥12॥

पद्मनाथ परमेश्वर प्रभु ने, राग-द्वेष को लाँघ लिया।
किन्तु रागियों ने ही उनको, राहु-केतु तक बाँध दिया॥
करें निवारण मात्र सूर्य ग्रह, प्रभु कमजोर नहीं इतने।
'सुव्रत' जिनका नाम मात्र सुन, मुक्तिरमा टेके घुटने॥13॥

(बसंततिलका)

हैं नष्ट-भ्रष्ट सुर छन्द सभी ऋचाएँ।
ऐसी दशा गुण कथा किस भाँति गायें॥
आशीष पा हम किए गुणगान थोड़ा।
दे दो क्षमा भगत् है अंजान मौंड़ा॥

(दोहा)

लाल कमल से शोभते, पद्मप्रभु जिनराज।
खिले कमल सम भक्त हम, अतः नमन हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(षट् कारक)

(चौपाई)

कर्त्ता कारक हम ना समझें, हम ही करते इसमें उलझें।
उलझे कर्त्ता सुलझें स्वामी, पद्मप्रभु को सदा नमामि॥

(दोहा)

वंदन का फल यह मिले, निज में निज का सार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 1॥

ॐ ह्रीं कर्त्ताविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सदा शुभाशुभ कर्म करें हम,फल सहने में शर्म करें हम।
तजे कर्म कारक यदि प्राणी, उसे खोज ले मुक्ति रानी॥
वंदन का फल यह मिले, कर्मों का परिहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 2॥

ॐ ह्रीं कर्मविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो साधन हर कार्य बनाता, जिस बिन कार्य नहीं बन पाता।
पर वो कार्य नहीं कहलाता, वही करण कारक विख्याता॥

वंदन का फल यह मिले, सम्यक् करण बहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 3॥

ॐ ह्रीं साधनविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नाम अन्य का कर्म हमारा, ऐसा है जग का व्यवहारा।
निज को निज का कर्म सिखा दो, सम्प्रदान कारक हटवा दो॥
वंदन का फल यह मिले, निज का लक्ष्य निखार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 4॥

ॐ ह्रीं लक्ष्यविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

किससे हमें दूर जाना है, किसकी शरण हमें पाना है।
अपादान कारक समझा दो, निज से निज का मिलन करा दो॥
वंदन का फल यह मिले, वीतरागता सार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 5॥

ॐ ह्रीं वियोगविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इष्ट देवता कौन हमारा, स्वामी पालक कौन सहारा।
क्या कारक अधिकरण कहानी, निज का हमें बना दो स्वामी॥
वंदन का फल यह मिले, निज का निज आधार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 6॥

ॐ ह्रीं आधारविभावविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(द्रव्य के छह सामान्य गुण)

जो अस्तित्व हमारा होता, उसका नाश कभी ना होता।
जग से वह अस्तित्व मिटा दो, अपने जैसा हमें बना लो॥
वंदन का फल यह मिले, सिद्धों की सरकार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 7॥

ॐ ह्रीं अस्तित्वस्वाभिमानविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अर्थ क्रिया द्रव्यों की रहती, ज्यों गागर खुद में जल भरती।
वह वस्तुत्व रहा गुण अपना, कब हो पूर्ण मोक्ष का सपना॥

वंदन का फल यह मिले, आतम का उद्धार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 8॥

ॐ ह्रीं वस्तुत्वक्षमताविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पल-पल में पर्याय बदलना, द्रव्य एक-सा कभी न रहना।
द्रव्य-गुणों पर्याय अशुद्धि, हरदो, करदो आतम शुद्धि॥
वंदन का फल यह मिले, शुद्ध द्रव्य गुण द्वार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 9॥

ॐ ह्रीं द्रव्यत्व-अशुद्धिविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

द्रव्य किसी ना किसी ज्ञान का, विषय बने चैतन्य ज्ञान का।
प्रमेयत्व गुण शक्ति बढ़ा दो, आतम ज्ञानी हमें बना दो॥
वंदन का फल यह मिले, केवलज्ञान फुहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 10॥

ॐ ह्रीं प्रमेयत्व-ज्ञानविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे द्रव्य मिले ना पर में, गुण ना बिखरें, रहते निज में।
वही अगुरुलघुत्व गुण माना, हमको तन से पृथक् बनाना॥
वंदन का फल यह मिले, गुण अनन्त भण्डार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 11॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व-देहविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भले कोई भी द्रव्य किसी का, कुछ ना कुछ आकार उसी का।
प्रदेशत्व गुण शक्ति सजा दो, सिद्धों जैसा हमें बना दो॥
वंदन का फल यह मिले, सिद्धों सम आकार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 12॥

ॐ ह्रीं प्रदेशत्व-संस्कारविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(षट्-आहार)

कर्माहार नारकी करते, भूखे प्यासे रहें, न मरते।
कर्माहार सभी का हर लो, ज्ञानामृत आतम में भर दो॥

वंदन का फल यह मिले, नशे कर्म आहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 13॥

ॐ ह्रीं कर्माहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो नोकर्माहार रहा है, अरिहन्तों का वही कहा है।
पूर्व कोटि वर्षों तक जीते, कुछ ना खाते कुछ ना पीते॥
वंदन का फल यह मिले, शुभ नोकर्माहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 14॥

ॐ ह्रीं नोकर्माहारदायकसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एकेन्द्रिय जो भोजन करते, लेपाहार उसी को कहते।
लेप-लेप तन जिसका स्वादी, लेपाहार हरो वैरागी॥
वंदन का फल यह मिले, हर लो लेपाहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 15॥

ॐ ह्रीं लेपाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोजन मानव तिर्यंचों का, भ्रमण बढ़ाये पिरपंचों का।
कवल-कौर का भोजन करना, कवलाहार उसी को कहना॥
वंदन का फल यह मिले, हर लो कवलाहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 16॥

ॐ ह्रीं कवलाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो अण्डस्थ पक्षि का भोजन, जिससे हुआ पाप का अर्जन।
ओजाहार पाप नशवा दो, ओज तेजमय आत्म दिला दो॥
वंदन का फल यह मिले, नाशो ओजाहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 17॥

ॐ ह्रीं ओजाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देवों का भोजन अमृत का, मन जब कहे कंठ से झरता।
जो आतम को नहीं सुहाता, वो मानसिक-आहार कहाता॥
वंदन का फल यह मिले, तज मानसिक आहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 18॥

ॐ ह्रीं मानसिकाहारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(मुनि की आहारवृत्तियाँ)

जैसे भ्रमर पुष्प पर रमते, किन्तु पुष्प क्षतिग्रस्त न करते।
यही भ्रामरी वृत्ति मुनि की, श्रावक को बाधक ना बनती॥
वंदन का फल यह मिले, बाधा का परिहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 19॥

ॐ ह्रीं समस्तविधबाधाविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्यों गाड़ी की ग्रीसिंग करना, अपनी मंजिल पहुँच ठहरना।
पेट अक्ष-म्रक्षण सम भरते, तन-गाड़ी-मुक्ति तक धरते॥
वंदन का फल यह मिले, नशे देह संसार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 20॥

ॐ ह्रीं देह-क्रियाव्यापारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्यों कचरे से गड्ढा भरते, उस पर फर्श मनोहर करते।
संत गर्त पूरण विधि करते, पेट अरस कण जल से भरते॥
वंदन का फल यह मिले, मिले ठोस परिवार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 21॥

ॐ ह्रीं रिक्तताविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कोई पानी कैसा भी हो, आग बुझाता जैसा भी हो।
मुनि आहार इसी विध करते, बस उदराग्नि-प्रशमन करते॥
वंदन का फल यह मिले, उदराग्नि परिहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 22॥

ॐ ह्रीं अग्निदाहविकारविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गाय घास ज्यों खाये देखे, कौन डालता यह ना देखे।
वैसी संत गोचरी करते, कर-पात्रों पर दृष्टि रखते॥
वंदन का फल यह मिले, दृष्टि बने मनुहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 23॥

ॐ ह्रीं दृष्टिदोषविनाशनसमर्थ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जीवदया संन्यास मरण ना, ब्रह्मचर्य व्रत तप रक्षण ना।
जरा, रोग उपसर्ग जहाँ हो, मुनि भोजन का त्याग वहाँ हो॥
वंदन का फल यह मिले, आत्म तजे आहार।
अतः पद्मप्रभु को करें, नमन अनन्तों बार॥ 24॥

ॐ ह्रीं अनाहार-आत्मप्राप्तये श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

(लय : भव-वन में...)

हे! नाथ पद्मप्रभु अविनश्वर, अध्यात्म शिखर के नायक हो।
हो पतित जनों के अवलम्बन, शिव मोक्षार्थी के पालक हो॥
संसार बीच में यूँ खिलते, ज्यों कमल कीच में खिलता है।
जो करे आपका पद वंदन, वह मोक्षमहल में मिलता है॥

हम हृदय कलश लेकर आये, इसमें श्रद्धा जल गंध भरो।
अक्षय रत्नों सा पुष्प खिले, दो ज्ञानामृत भव अंध हरो॥
चिन्मय की धूप सुगन्धी दो, फिर चिदानन्द को घन कर दो।
दो चरण शरण की धूल हमें, अपना आतम मधुवन कर दो॥

(दोहा)

रत्नत्रय की नाँव के, तुम हो खेवन हार।
नमन करें यह अर्घ ले, हमें उतारो पार॥

ॐ ह्रीं कर्त्ताभोक्तास्वामीविभ्रमविनाशनसमर्थ-श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः॥

समुच्चय जयमाला

गाय दूध से शोभती, खिले पुष्प से बेलि।
नारी शोभे शील से, गुरु से चेला चेलि॥
कमल सूर्य से शोभते, कमलों से तालाब।
भव्य पद्मप्रभु पद्म से, यों ज्यों खिले गुलाब॥

(ज्ञानोदय)

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, परम पूज्य परमातम जय।
श्रेष्ठ ज्योति पावन परमेष्ठी, चलते फिरते सिद्धालय॥
कष्टजयी हो, कालजयी हो, कामजयी हो कर्मजयी।
सिंहासन पर भव्यकमल के, पद्मसूर्य हो आत्मजयी॥ 1॥

पूज्य पद्मप्रभु जयजिनेन्द्र हो, प्रभु अर्हंत जिनेश्वर हो।
नग्न दिगम्बर तीर्थंकर हो, जिन भगवंत महेश्वर हो॥
लक्ष्यरूप शुद्धातम पाके, तुम तो माला-माल हुए।
स्वानुभूति में रमण-भ्रमणकर, स्वामी आप निहाल हुए॥2॥

चिदानंद चैतन्यधाम को, पाने हम दर-दर भटके।
शुद्धातम तो मिली न लेकिन, भव-भव में खाये झटके॥
इसका कारण सिर्फ एक ही, हमें समझ में यह आया।
परमातम को विसरा करके, किसने शुद्धातम पाया॥ 3॥

अतः निजातम यदि पाना तो, प्रभु अर्हंत समझ लो रे।
प्रभु अर्हंत पूज के भैया, भव से शीघ्र सुलझ लो रे॥
क्योंकि द्रव्य गुण पर्यायों से, प्रभु अर्हंत जानता जो।
मोह उसी का ही बस नशता, निज शुद्धात्म जानता जो॥4॥
कर्म ज्ञान दर्शन आवरणी, अंतराय वा मोह हरे।
यही घातिया कर्म हरण कर, नंत चतुष्टय प्राप्त करे॥
अनंत दर्शन ज्ञान वीर्य सुख, अनंत सम्यग्दर्शन पा।
समवसरण में दिखे चतुर्मुख, सुर-नर-यतिपति पूजें आ॥5॥

प्रकृति नशा कर्मों की त्रेषठ परमौदारिक तन पाया।
छियालीस गुण का वैभव पा, प्रातिहार्य का धन पाया॥
शुद्ध हुई पर्याय आपकी, सकल द्रव्य गुण शुद्ध रहा।
वीतराग विज्ञान शिरोमणि, चरण भेदविज्ञान अहा॥ 6॥

भूख-प्यास भय रोग बुढ़ापा, जन्म-मरण विस्मय निन्द्रा।
खेद स्वेद मद शोक अरति या, राग-द्वेष मोह चिंता॥
यही अठारह दोष न प्रभु में, अतः वीतरागी साँचे।
साँचे ऐसे आप्त प्राप्तकर, झूम-झूमकर हम नाँचे॥ 7॥

लोकालोक त्रिकाल जानते, या देखें युगपत ऐसे।
गुण पर्याय द्रव्य अनंत सब, पहचाने गो-पद जैसे॥
तभी आप सर्वज्ञ कहाते, सबको हित का दो रास्ता।
इसीलिए हो हितोपदेशी, अतः आप पर है आस्था॥ 8॥

द्वादशांग ओंकाररूप जो, अर्द्धमागधी भाषामय।
जो अष्टादश महा भाषमय, सात शतक लघु भाषामय॥
अनेकान्त स्याद्वाद अनिच्छुक, सप्तभंग जय जिनवाणी।
तालु ओष्ठ कंठादि न हिलते, जो सर्वांग खिरे वाणी॥9॥

लोक शिखर पर भले विराजे, पर सबका उपकार करो।
इतना वैभव कैसे पाया चेतन! तनिक विचार करो॥
तजे व्यसन फिर मिथ्यादर्शन, फिर पापों को छोड़ दिया।
ज्ञान प्राप्त कर रत्नत्रय धर, मोह चक्र फिर तोड़ दिया॥10॥

बिन वैराग्य त्याग हो कैसे, त्याग बिना चारित्र नहीं।
बिन चारित्र ध्यान हो कैसे, ध्यान बिना थिर चित्त नहीं॥
शुद्धोपयोग उसे हो कैसे, जिसने ना तो व्यसन तजे।
तजा न परिग्रह धरा न संयम, पूज्य पद्मप्रभ नहीं भजे॥11॥

नाथ! हमारी सुन्दर आतम, रही बाँझ की बाँझ अहो।
रत्नत्रय के पुत्र दिलाकर, 'मुनिसुव्रत' की गोद भरो॥
आत्म महल में शुद्धातम की, किलकारी अब गूँज उठे।
सुन लो अर्जी पूज्य पद्मप्रभु, भक्तों से क्यों हो रूठे॥ 12॥

(सोरठा)

पूज्य पद्मप्रभु नाथ, उत्तम मंगल हैं शरण।
हमें मिले प्रभु साथ, सादर हम पड़ते चरण॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री पद्मप्रभविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान्।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, पद्मप्रभु विधान॥
दो हजार तेरह जून, मंगल चार तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : केसरिया केसरिया.....)

आरतियाऽऽ, आरतियाऽऽ[2],
आज उतारें हम आरतिया
पद्मप्रभु परमेश्वर जी की[2]
आज उतारें ......॥

पूज्य पद्मप्रभु जग से न्यारे।[2]
वीतरागता के उजयारे॥[2]
शिव शिव-पथ के सारथिया-सारथिया।
आज उतारें ......॥ 1 ॥

धरण सुसीमा के सुत प्यारे।[2]
हम भक्तों के नाव किनारे॥[2]
विखराते सुख भारतिया-भारतिया॥
आज उतारें ......॥ 2 ॥

नाथ! आपने सब कुछ छोड़ा।[2]
मंत्र जाप निज से चित जोड़ा॥[2]
पाये प्रभु की मूरतिया-मूरतिया।
आज उतारें ......॥ 3 ॥

हृदय हमारा तुम्हें खोजता।[2]
करे वंदना चरण पूजता॥[2]
भूल न पाये सूरतिया-सूरतिया।
आज उतारें ......॥ 4 ॥

भव से स्वामी हमें बचाओ।[2]
सिद्ध महल में शीघ्र बुलाओ॥[2]
'सुव्रत' की सुन लो बतिया-सुन लो बतिया।
आज उतारें ......॥ 5 ॥